ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष 97 अंक 15 पृष्ठ 16 मूल्य ₹5/- मई प्रथम प्रकाशन 05 मई से 20 मई, 2023

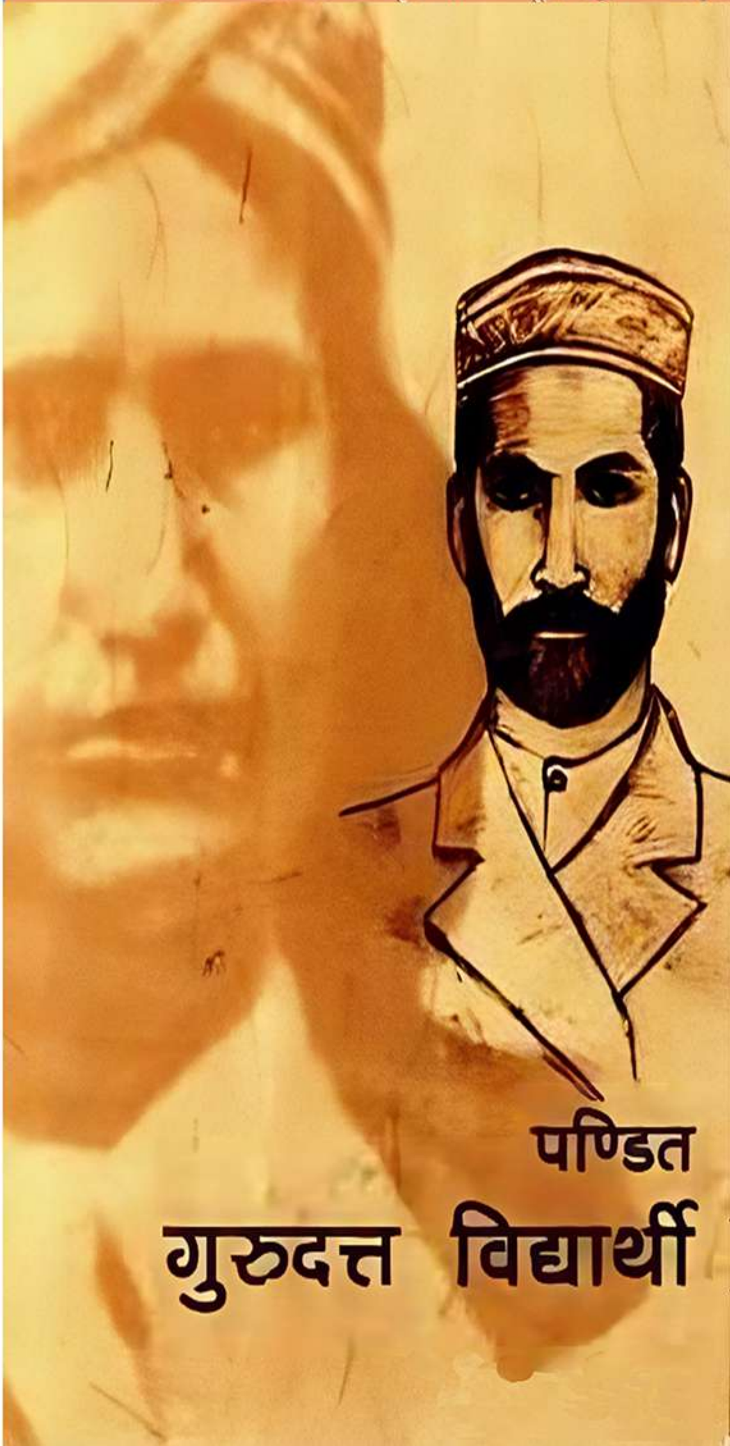

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म– 26 अप्रैल, 1864, मुल्तान, पाकिस्तान; मृत्यु– 19 मार्च, 1890) आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता थे। वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य थे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की गिनती आर्य समाज के पाँच प्रमुख नेताओं में की जाती थी। दयानन्द सरस्वती के देहान्त के बाद गुरुदत्त विद्यार्थी ने उनकी स्मृति में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय और लाला हंसराज के प्रयत्नों से ही । जून, 1886 को लाहौर, पाकिस्तान में डीएवी स्कूल की स्थापना हुई थी।

डॉ भवानीलाल भारतीय आर्य जगत की महान विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में १ मई १९२८ को भारतीय जी का जन्म हुआ।

अंतरराष्ट्रीय यज्ञ दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, जयपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता डॉ॰ मोक्षराज यज्ञ करते हुए।

भरतपुर जिले में स्वामी चेतनानंद जी द्वारा वेद प्रचार।

आर. एन. आई. नं. 10471/60

ओ३म्

आर्यमार्तण्ड

आर्यप्रतिनिधिसभा राज. का मुखपत्र

वैशाख, शुक्लपक्ष, चर्तुदशी, सम्वत् 2080, कलि सम्वत् 5124, दयानन्दाब्द 199, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,124

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धांः सत्ये प्रजापतिः।।

संरक्षक

1. डॉ. रमेशचन्द गुप्ता, अमेरिका
2. श्री दीनदयाल गुप्त (डॉलर फाउन्डेशन)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री विजयसिंह भाटी
2. श्री जयसिंह गहलोत

सम्पादक

1. श्री जीव वर्धन शास्त्री

परामर्शक

1. डॉ. मोक्षराज

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुधीर कुमार शर्मा 2. श्री अशोक कुमार शर्मा
3. डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य 4. श्री नरदेव आर्य
5. श्री बलवन्त निडर 6. श्री ओमप्रकाश आर्य

विषयानुक्रम

– वैदिक साहित्य में मानव मूल्य 04
– भगवद्गीता में निराकार एवं सर्वव्यापी... 07
– प्रचण्ड समर्पण–अखण्ड प्रवाह 08
– आर्य समाज की अग्नि 11
– समाचार – वीथिका 12

आर्य मार्तण्ड

वार्षिक सदस्यता शुल्क	–	**रु. 100/–**
पाक्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 2100/–
मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 5100/–
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 11000/–
वार्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 21000/–

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान राजापार्क,
जयपुर – 302004
0141–2621879, 9314032161
e-mail : aryapratinidhisabhrajasthan@gmail.com

दि राजस्थान स्टेट को–ऑपरेटिव बैंक लि.
खाता धारक का नामः–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर
खाता संख्या :– **10008101110072004**
IFSC Code :- RSCB0000008
सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।
AAHAA5823D/08/2020-21/S-008/80G

मुद्रण : दिनांक 04.05.2023

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जीव वर्धन शास्त्री ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से आर्य मार्तण्ड पत्रिका मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयुपर से प्रकाशित सम्पादक– **श्री जीव वर्धन शास्त्री–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा**

वैदिक साहित्य में मानव मूल्य

– डॉ. योगेन्द्र कुमार धामा

पिछले अंक का शेष भाग...

3. सामाजिक मानव मूल्य– समाज के जिन आदर्शों के माध्यम से उस समाज में रहने वाला मनुष्य निरन्तर विश्व कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होता हुआ परम तत्त्व को प्राप्त करता है, वे ही वस्तुतः सामाजिक मानवीय मूल्य हैं। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**[31] के उद्घोषपूर्वक सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने के प्रयास के साथ वेद ने मानव के लिए उन श्रेष्ठाचरणों का वर्णन अनेक स्थानों पर किया है। जिन सभी का सामान्य वर्णन भी यहाँ सम्भव नहीं है, उनमें से कुछ का निदर्शन मात्र करने का प्रयास किया जा रहा है।

सर्वकल्याणाभिलाषा– सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः इत्यादि सर्व कल्याण की अभिलाषा के साथ जीवन यापन करने वाली भारतीय मनीषा को इस प्रकार की उदात्त प्रेरणाएं निश्चित रूप से वैदिक काल से ही प्राप्त हो रही थी। वेद में अनेक स्थानों पर प्राणिमात्र के कल्याण की प्रार्थना की गई है।[32] वेद के अनुसार शासकों द्वारा अपने प्रजाजनों के प्रति निरन्तर कल्याण का भाव बनाये रखा जाना चाहिए। उन्हें सर्वदा सबके हित करने का तथा स्वयं ज्ञान सम्पन्न बनने का प्रयास करना चाहिए। उनका कर्तव्य है कि वे जनता को सब प्रकार के पापमय आचरणों से उपदेश द्वारा और योग्य शासन द्वारा बचायें।[33] इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को अपने मन में इस प्रकार की इच्छा धारण करनी चाहिए, जिससे उसके माता पिता का, पशुओं का, मनुष्यों का तथा सब प्राणिमात्र का कल्याण हो।[34]

सहृदयता– हृदय में समान भाव के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ही सहृदयता है। मन से पारस्परिक वैर भाव को नष्टकर आपस में अनुकूलतापूर्वक आचरण करने की शिक्षा वेद में अनेक स्थानों पर प्राप्त होती है। अथर्ववेद में तो एक सम्पूर्ण सूक्त इन्ही भावों को समर्पित है।[35] वेद कहता है कि जिस प्रकार गौ सद्योत्पन्न अपने वत्स के प्रति व्यवहार करती है। उसी प्रकार सहृदयता, उत्तम मन तथा निर्वरता धारण करके मनुष्यों को परस्पर प्रेम का भाव बढ़ाना चाहिए, इसी से प्राणिमात्र का कल्याण होगा।[36] जिस प्रकार अरे नाभी के चारों ओर होते हैं। उसी प्रकार आप सब मिलकर एक ही कार्य में प्रयत्नशील रहो।[37] अपने अन्दर दूसरों की सहायता करने का भाव रखो, एक मार्ग से आगे बढ़ो, उत्तम सुसंस्कार सम्पन्न मन को बनाओं, सर्वदा हृदय की प्रसन्नता रखो, क्योंकि इसी से अमृतपूर्ण सुख की प्राप्ति होती है।[38]

एकता– मूल्यों की इसी श्रृंखला में एक्यभाव अर्थात् एकता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति एक्यभाव को जागृत करने का विचार प्राचीन काल की विशिष्ट उपलब्धि है। इस भाव की पुष्टि में वेद में अनेक स्थानों पर ऋषियों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। वेद कहता है कि मन, संकल्प और कर्म के व्यवहार ऐसे उत्तम होने चाहिए कि जिनसे सब की एकता हो जाए और कभी विरोध न हो सके। इसलिए जो मनुष्य विरुद्ध आचरण करने वाले हों, उनको ही एक विचार से युक्त करके अन्यों के अनुकूल बनाना चाहिए।[39] ज्ञान प्राप्त करके आपस में द्वेष रहित होकर मिलजुल कर संघ शक्ति से रहना चाहिए। अपने मन को सुसंस्कारों से परिपूर्ण और प्राचीन ज्ञानी पुरूषों के समान अपना शुद्ध व्यवहार करना

चाहिए। यही उन्नति का मार्ग है।[40] शरीर, मन और कर्म से समाज के अन्दर समता और एकता रहनी चाहिए। किसी प्रकार भी आपस में विरोध नहीं होना चाहिए।[41]

समानता– सभी जीवों के प्रति समानता का दृष्टिकोण प्रकृति ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उसी भाव को ग्रहण करने की शिक्षा वेदों में हमें प्राप्त होती है। वेद के अनुसार कोई प्राणी बड़ा अथवा छोटा नहीं है। ईश्वर की दृष्टि में सभी एक हैं। ये सभी भाई उन्नति के लिए मिलकर प्रयत्न करने वाले हो, क्योंकि यदि ये मिलकर पुरुषार्थ करेंगे, तभी ये उन्नत हो सकते हैं। आपस में लड़ते हुए ये अवनति को प्राप्त होंगे। इन सबका एक ईश्वर ही पिता है। वह उत्तम कर्म करने वाला है। इनके लिए उत्तम प्रकार का दूध देने वाली माता प्रकृति है। जो रोने में अपना समय नहीं खोते, परन्तु पुरुषार्थों में अपना समय लगाते हैं। उनके लिए उत्तम समय सदा ही रहता है।[42]

पुरुषार्थ– पुरुषस्य मनुष्यस्य अर्थः प्रयोजनमिति पुरुषार्थः अर्थात् मानव जीवन में निरन्तर किये जाने वाले सत्कर्म ही पुरुषार्थ है जिसे पारिभाषिक शब्दावली में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर मानव को सदैव कर्म करने के लिए प्रेरित किया गया है। उसके अनुसार इस जगत् में परम पुरुषार्थ करते हुए ही मनुष्य को दीर्घ जीवन प्राप्त करने की इच्छा करनी चाहिए। पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करना ही मनुष्य का परम धर्म है। उद्धार का दूसरा कोई भी मार्ग नहीं है। कर्त्तव्य कर्म करने से ही सब दोष दूर हो जाते हैं और मनुष्य निर्दोषी हो जाता है।[43] पुरुषार्थी मनुष्य की ही देव सहायता करते हैं, सुस्त मनुष्य की नहीं। देव प्रमादी मनुष्य को दण्ड देते हैं, इसलिए हर एक को उचित है कि वह प्रमाद न करते हुए श्रेष्ठतम पुरुषार्थ करें।[44] इन्हीं भावां को पोषित करता हुआ ही उपनिषद् का **ऋषि उत्तिष्ठत! जाग्रत! प्राप्यवरान्निबोधत। चरैवेति–चरैवेति।।** की सुन्दर प्रेरणा प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त इन मानव मूल्यों के अतिरिक्त भी सामूहिकता[45],दान[46], परोपकार[47], निरन्तर उन्नति की अभिलाषा[48], यश प्राप्ति की अभिलाषा[49], आश्रम धर्म[50], वर्णधर्म[51], अतिथि सत्कार[52] तथा श्रद्धा[53] आदि अनेक मूल्यों का वेद में विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। इन श्रेष्ठ मानव मूल्यों को अपने जीवन में आचरण में लाने के कारण ही यह भारतीय समाज आदि काल से ही विश्व वन्द्य रहा है। जिसका निदर्शन हमें मनु के निम्न लोक में प्राप्त होता है।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्व मानवः।।

सन्दर्भ

1. पाणिनीय धातु पाठ अदादिगण 57
2. पाणिनीय धातु पाठ दिवादिगण 60
3. पाणिनीय धातु पाठ तुदादिगण 141
4. पाणिनीय धातु पाठ रूधादिगण 13
5. पाणिनीय अष्टाध्यायी–हलश्च 3.3.121
6. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्वामी दयानन्द
7 मनुस्मृति 2.6
8. मनुस्मृति 2.7
9. नीति शतक
10. धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयः शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
मनुस्मृति 6.92
11. यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः
वैशेषिक 1.1.2
12. चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः – पू. मीमांसा 1.1.2

13. अपामीवामष स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः।।
(साम 396) श्रुति सौरभ– पृ.160
14. सत्यमेव जयतेनानृतम्।।
मुण्डकोपनिषद् – 3.1.6. यजु. 19.7
अश्रद्धामनृतेऽधाच्छ्रद्धा सत्ये प्रजापतिः।।
श्रद्धयासत्यमाप्यते।। यजु. 19.30
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।
यजु 15 इत्यादि।
15. मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।। यजु 40.1
16. तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः यजु. 40.1
17. अथर्ववेद – 11.5.12
18. अथर्ववेद– 11.5.18
19. अथर्ववेद– 11.5.12
20. यजुर्वेद 19.39
21. ऋग्वेद 9.83.1
22. ऋतं तपः सत्यं तपः श्रुतं तपः शान्तं दमस्तप शमस्तपो दानं तपो यज्ञस्तपो भूर्भुवः स्वर्ब्रह्मैतदुपास्वैतत्तपः – तै. आ. 10.8
23. यजुर्वेद– 32.13–16, अथर्ववेद– 6.108.2–5
24. अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीम्, वाचं वदतु शान्तिवाम्।।
अथर्ववेद 3.30.2
25. अथर्ववेद 3.30.3
26. अथर्ववेद 3.30.4–5
27. यजुर्वेद – 6.35
28. यजुर्वेद– 13.35
29. यजुर्वेद 12.57
30. यजुर्वेद – 2.34
31. ऋग्वेद 9.63.5
32. ऋग्वेद 10.63.4, 10.63.12, 10.7.1, 7.35.15 इत्यादि ।
यजुर्वेद – 25.15 इत्यादि।
33. ऋग्वेद 10.63.8
34. अथर्ववेद 1.31.4
35. अथर्ववेद– 3.30
36. अथर्ववेद – 3.30.1
37. अथर्ववेद– 3.30.6
38. अथर्ववेद – 3.30.7
39. अथर्ववेद – 6.94.1
40 अथर्ववेद – 6.64.1
41. अथर्ववेद – 6.74.1
42. ऋग्वेद – 5.60.5
43 यजुर्वेद – 40.2
44. ऋग्वेद – 8.2.18, अथर्ववेद 2.29.3, यजुर्वेद 3.47, 11.21, 23.15 इत्यादि।
45. ऋग्वेद– 10.191.2,3,4 इत्यादि ।
46. ऋग्वेद 10.117.1–8
47. ऋग्वेद– 10.117
48. अथर्ववेद – 2.11.1–5, 8.1.4,6,13, 4.31.7
49. ऋग्वेद – 8.67.13, 1.9.7, यजुर्वेद – 12. 110
50. अथर्ववेद 11.5.1,3,16, 6.78.2, 3.12.1–7
51. अथर्ववेद – 3.19.1–5, 5.18.9, 6.97.3, 5. 53.11, 3.15.1–6, ऋग्वेद – 7.103.18 यजुर्वेद 31.11.13, 30.5
52. अथर्ववेद – 9.6.3. 52
53. ऋग्वेद 10.151.1–5 53

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाणिनीय धातुपाठ, आर्ष साहित्य संस्थान, 119. गुरूकुलगौतमनगर नई दिल्ली।
2. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लक्ष्मणचन्द आर्य, एफ–8 / 23. कृष्णानगर, दिल्ली–511
3. श्रुतिसौरभ, पं. शिव कुमार शास्त्री– समर्पण शोध संस्थान गाजियाबाद।

शेष भाग पृष्ठ संख्या 7 पर ....

भगवद्गीता में निराकार एवं सर्वव्यापी ईश्वर की मान्यता

आचार्य रामगोपाल शास्त्री

कुछ लोग भ्रमवश यह समझते हैं कि भगवद्गीता ग्रन्थ में श्रीकृष्ण की भक्ति करने का निर्देश दिया है किन्तु ऐसी बात नहीं है। गीता का गूढ़ अध्ययन करने पर पता चलता है कि इसमें श्रीकृष्ण तो उपदेशक हैं। वे स्वयं अर्जुन को निराकार एवं सर्वव्यापक ब्रह्म की भक्ति एवं उपासना करने का उपदेश दे रहे हैं।

गीता के सप्तम अध्याय के श्लोक संख्या 25 में ईश्वर स्पष्टरूप से कहते हैं–

मूढ़ोऽयंनाभिजानाति लोकोमामजमव्ययम्।

पदच्छेद–मूढःअयम् न–अभिजानाति लोकःमाम् अजम् अव्ययम्। अज्ञानी लोग नहीं जानते हैं कि मैं अ–ज (जन्मरहित, देहरहित) तथा अव्यय (नाशरहित) हूँ।

श्रीकृष्ण तो शरीरधारी थे। उनका जन्म भी हुआ था और निधन भी। कहते हैं कि श्रीकृष्ण एक बार वन में सो रहे थे, विश्राम कर रहे थे। तभी एक शिकारी ने 'मृग बैठा है' ऐसा समझकर श्रीकृष्ण के पाँव में बाण मार दिया और उसी बाण से श्रीकृष्ण का प्राणान्त हो गया। ईश्वर के विषय में गीता कहती है कि वह अव्यय, अविनाशी एवं अविकारी है। इस बात को निम्नांकित श्लोक में स्पष्ट कर दिया गया है–

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य, बिभर्त्यव्ययमीश्वरः।।

(15–17)

श्रीकृष्ण कहते हैं कि लोग अज्ञानवश मुझे ही परमात्मा समझ लेते हैं किन्तु वह उत्तम पुरुष तो अन्य ही है। जिस तत्त्व की मैं भी भक्ति करता हूँ वह तत्त्व (उत्तम पुरुष) परमात्मा कहलाता है। वह परमात्मा विराट है। वह तीनों लोकों में प्रविष्ट होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करता है। उसी निराकार, अविनाशी एवं अविकारी परमात्मा की उपासना करना उचित है।

परमात्मा का स्वरूप समझाते हुए परमयोगी श्रीकृष्ण कहते हैं–

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।

(अ. 15, श्लोक 16)

संसार में दो तत्त्व हैं– शरीर तथा आत्मा। शरीर क्षर (नाशवान्) है जबकि आत्मा अक्षर (अविनाशी) है किन्तु परमात्मा कूटस्थ (अविकारी, अपरिवर्तनशील तथा अक्षर) विनाशरहित, अमर है।

से.नि.प्राचार्य, पी.जी. संस्कृत कॉलेज, फतेहपुर शेखावटी (सीकर) राज.

पृष्ठ संख्या 6 का शेष भाग....

4. वेदामृत, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर।
5. यजुर्वेद शतकम्, स्वामी जगदीश्वरानन्दसरस्वती, गोविन्दराम हासानन्द – दिल्ली
6. वैदिक प्रवचन सुरेश चन्द्र वेदालंकार आर्य प्रकाशन, अजमेरी गेट, दिल्ली।
7. ऋग्वेद, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली।
8. यजुर्वेद, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली।
9. अथर्ववेद, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

व्याख्याता, संस्कृत, गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर राजस्थान

प्रचण्ड समर्पण–अखण्ड प्रवाह

डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी

200 वर्ष पूर्व महान् समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी और वेदों के विद्वान् दयानन्द सरस्वती के बारे में तो हम सब जानते ही हैं। अपनी प्रिय बहन और चाचा की असमय मृत्यु देखकर बचपन में ही उनमें बैराग्य पैदा हो गया और जन्म–मरण से मुक्ति पाने हेतु वे घर छोड़कर निकल गये।

बरसों तक घने वनों, नदियों, पहाड़ों पर घूमने तथा अनेक गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करने के बाद उन्हें मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से मोक्ष का ज्ञान प्राप्त हो गया, पर गुरु विरजानन्द जी ने तो गुरु दक्षिणा में जीवन ही माँग लिया। उन्होंने कहा अगर मुझे गुरु दक्षिणा देना चाहते हो तो अपने कल्याण और मोक्ष के लिये जप, तप, ध्यान और समाधि के बजाय इस अज्ञान, अभाव, आडम्बर और परतन्त्रता से पीड़ित दीन दुःखी देशवासियों को दुःखों से आजादी हेतु अपना जीवन लगा दो, स्वामी दयानन्द ने यही किया।

स्वामी दयानन्द जब अंग्रेज राज्य के राजपूताना क्षेत्र में धर्मप्रचार के दौरान चित्तौड़ पहुँचे तो चित्तौड़ किले को देखकर लौटते हुये उन्होंने अपने शिष्य आत्मानन्द से कहा, कि आत्मानन्द इस शौर्य, त्याग, बलिदान की भूमि पर एक गुरुकुल स्थापित करना चाहिये, जहाँ पर बच्चों को समर्पण और राष्ट्र तथा धर्म के लिये बलिदान होने के संस्कार दिये जा सकें।

स्वामी दयानन्द के अन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द तब हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी चला रहे थे। वहाँ विद्याध्ययन कर रहे एक विद्यार्थी ने अपने दादा गुरु दयानन्द की इस इच्छा को पूरा करने के मन में ठानी मेरठ के पास अपने गांव जाकर अपने पिताजी को कहा कि हम चार भाई हैं, आप जमीन जायदाद का बंटवारा कर मेरा हिस्सा मुझे दे दीजिये पिताजी के कारण पूंछने पर बता दिया कि मैं इसे बेचकर चित्तौड़ में गुरुकुल स्थापित करूँगा पिताजी और भाइयों ने हिस्सा दे दिया, हिस्से की जमीन के बजाय उन्हें स्वर्ण, चाँदी, आभूषण और सिक्के दे दिये, इस पैसे से स्वामी व्रतानन्द जी चित्तौड़ आकर सन् 1930 निलामी में 100 बीघे जमीन खरीदी, जिसमें सन् 1936 निवास, विद्यालय और यज्ञशाला के अतिरिक्त बच्चों के लिये गेहूँ उपजाने हेतु खेत भी बनायें, स्वामी व्रतानन्द की विद्वत्ता और व्रत को देखते हुये तत्कालीन चित्तौड़ कलेक्टर ने चित्तौड़ के धनिकों को कह दिया कि कोई बोली नहीं बढ़ायेगा, स्वामी जी पवित्र कार्य हेतु जमीन खरीद रहे हैं। आज भी चित्तौड़ रेलवे स्टेशन से लगा हुआ यह गुरुकुल सनातन आर्य संस्कृति का ध्वजवाहक बना हुआ है।

इसी गुरुकुल में बिहार निवासी एक आर्य संन्यासी गुरुकुल एटा से स्वामी व्रतानन्द जी को सहयोग करने आये। गुरुकुल के कार्य से शेष बचे समय में ये स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास एक गांव में पेड़ के नीचे बैठकर बच्चों को पढ़ाते थे तथा उनके साथी सत्यवीर वर्णी जी साँप, बिच्छु काटने और अन्य सामान्य रोगों की छूटपुट दवा देते थे। एक बार मेवाड़ महाराणा श्री भूपालसिंह जी वहाँ से

निकले तो उन्होंने पेड़ के नीचे कुछ ग्रामीणों तथा संन्यासी स्वतन्त्रानन्द और उनके सहयोगी वर्णी जी को देखकर पूछा कि ये क्या हो रहा है? गांववालों द्वारा जानकारी देने पर, प्रसन्न होकर मेवाड़ महाराणा ने शिक्षा और स्वास्थ्य के इस सेवा कार्य के लिये आसपास की कई एकड़ जमीन दान दे दी।

स्वतन्त्रानन्द जी ने अलग से कोई समिति या ट्रस्ट नहीं बनाया था अतः जमीन का पट्टा व्रतानन्द जी के आर्य गुरुकुल के नाम से बना! यहाँ पद्मिनी आर्य कन्या गुरुकुल श्री जीववर्धन शास्त्री और आचार्य डॉ. सोमदेव जी के मार्गदर्शन में अभी भी चल रहा है! देशभर से पढ़ने आयी हुयी बालिकाओं से यहां जब मैंने वेदपाठ सुना तो मन प्रसन्न हो गया।

यहीं स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर वैदिक धर्म के प्रचार हेतु प्रतापगढ़ के पास बमोत्तर गांव में आ गये तथा जनजाति के बच्चों को पेड़ के नीचे पढ़ाने लगे! बाद में गांव वालों

ने दो कमरे भी बना दिये, अनेकों बच्चे जो विद्यालय में पढ़े उनमें से एक नन्दलाल मीणा कई बार विधायक तथा दो–तीन बार राजस्थान के केबिनेट मन्त्री रहे।

सन् 1955 के लगभग श्री शंकरलाल जी व्यास कोटा से बांसवाड़ा आये और उन्होंने बड़े पैमाने पर हो रहे धर्मान्तरण को देखा। तथा सभा से प्रार्थना की तो आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बुलाने का सुझाव दिया। अध्यापक शंकरलाल जी व्यास जो बाद में स्वामी स्वतन्त्रानन्द से दीक्षा लेकर वानप्रस्थी शंकर बन गये। उन्होंने बांसवाड़ा, कुशलगढ़ क्षेत्र में विद्यालय, छात्रावास खोले, यज्ञ और वेद प्रचार किया व धर्मान्तरण की आंधी को रोका। पहले किराये के दयानन्द सेवाश्रम चलाया, बाद में दान में प्राप्त जमीन पर जन सहयोग से तथा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आजादी के रजत जयन्ती से शुरु हुई स्वतन्त्रता सेनानी की पेंशन से विशाल भवन का निर्माण कराया

तथा नगर के मध्य वेद मन्दिर का भी निर्माण किया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, शंकरानन्द जी के सहयोग से आधुनिक शिक्षा एवं संस्कार देने का काम वर्षों तक करते रहे। शंकरानन्द जी की मृत्यु होने तथा वृद्धावस्था होने से स्वतन्त्रानन्द जी आश्रम में सीमित हो गये। उनकी मृत्यु के बाद इस भवन और जमीन का क्या होगा? कौन सम्भालेगा यह चिन्ता स्वामी जी को होने लगी। ऐसे समय में गुरुकुल आम सेना का एक ब्रह्मचारी बांसवाड़ा आया। वह तब महु, मध्य प्रदेश से एम.ए. का अध्ययन कर रहा था। परीक्षा बाद वह पुनः बांसवाड़ा आया, स्वामी जी के काम में मदद करने लगा। स्वतन्त्रानन्द जी ने कहा स्थायी रूप से यहाँ रहकर ये आश्रम सभालोगे क्या? जीववर्धन जी के हाँ कहने पर स्वामी जी ने कहा कि नहीं कर पाओगे, शास्त्री हो, एम.ए. कर लिया है, किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में जाकर नौकरी कर गृहस्थी बसा लोगे, फिर आश्रम के लिये समय कहाँ मिलेगा? मुझे इतने वर्ष हो गये अभी तक कोई युवा संन्यासी मिला नहीं, वानप्रस्थी जी के बाद कोई सहायक भी नहीं मिला, स्थानीय कार्यकर्त्ता भी नहीं है। मेरी मृत्यु सन्निकट है। सम्पत्ति गलत हाथों में चली जावे उसके पूर्व मैं इसे वी.एच.पी. के भारतमाता ट्रस्ट के नाम कर जाता हूँ। शास्त्री जीववर्धन ने कहा मैं इसे आजीवन समभालूँगा, स्वामी जी ने कहा बड़ा कठिन काम है। विश्वास नहीं होता है। यदि तुम अपनी सारी डिग्रीयाँ यहाँ लाकर जला दो तो मुझे विश्वास होगा कि तुम नौकरी के लिये नहीं भागोगे, जीववर्धन ने अपनी दसवीं, शास्त्री व एम.ए. की डिग्रीयाँ तत्काल स्वामी के चरणों में रखकर अग्नि को भेंट करने को दे दी। स्वामी जी की मृत्यु को आज अनेक वर्ष हो गये। जीववर्धन जी शास्त्री बांसवाड़ा के वनवासी क्षेत्र में शिक्षा, संस्कार और धर्म प्रचार कर रहे हैं। जनजातियों में चर्च के अलावा, नक्सलियों के द्वारा फैलाये जा रहे विघटनवाद को भी टक्कर दे रहे हैं। नगर के अलावा वे वनवासी युवाओं में भी काफी लोकप्रिय हैं। जिले में उन्होंने अन्य आर्यसमाजें भी स्थापित की हैं। वर्तमान में वे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री के नाते पूरे राज्य में आर्यसमाज के संगठन को भी मजबूत कर नया जीवन दे रहे हैं। वे अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के समर्पित और निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के रूप में सुदूर उत्तरपूर्वांचल के नागालैण्ड़ क्षेत्र में भी कई विद्यालय तथा आश्रमों द्वारा शिक्षा और संस्कार प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि न सिर्फ उन्हें चिरायु रखें बल्कि योग्य, शिष्य भी देवें। ताकि स्वामी दयानन्द सरस्वती से चली यह सेवा और समर्पण की गंगा अविरल बहती रहे।

अपील

राजस्थान के सभी आर्य समाजों के मंत्री व प्रधानों से निवेदन है कि वे कम से कम 10 –10 आर्य मार्तंड के ग्राहक बनाएं। ग्राहक शुल्क मात्र 100/– वार्षिक है।

– जीववर्धन शास्त्री मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर।

आर्य समाज की अग्नि

ओम प्रकाश गुप्ता

आरम्भ में आर्य समाज की आवाज आग की तरह द्रुतगति से समस्त भारतवर्ष (आर्यावर्त) में ही नहीं विदेशों में भी फैली थी। जैसे अग्नि समस्त व्यर्थ कबाड़ को भस्म कर सभी ओर प्रकाश करती है वैसे ही आर्य समाज ने भी समस्त पाखंड, अंधविश्वासों व समाज में व्याप्त बुराइयों को भस्म कर समस्त मानव जाति को प्रकाशित किया । महर्षि दयानंद सरस्वती जी के दिल में धधकती आग को आर्य समाज के माध्यम से उनके अनेकों अनुयायियों ने गांव और शहरो तक फैलाया और धर्म, ईश्वर एवं मोक्ष के सत्य स्वरूप को प्रस्तुत किया ।

आर्य समाज की अग्नि में अनेकों त्यागियों ने स्वयं की आहुतियां तक दी है । स्वामी श्रद्धानंद जी ने सर्वस्व दान कर गुरुकुल परंपरा को पुनर्जीवित किया, पंडित लेख राम जी तो अपने सिर को ही हथेली पर लेकर फिरते रहते थे, पंडित गुरुदत्त को तो आर्य समाज के अतिरिक्त और किसी का होश नहीं रहता था, महात्मा हंसराज जी का समस्त जीवन त्याग पूर्ण रहा। इस प्रकार अनेकों विद्वानों और संन्यासियों ने इस आग को कभी भी धीमा नहीं पड़ने दिया ।

परंतु अब आर्य समाजियों के ह्रदय में अग्नि ही नहीं रही है। आज हमारे अंदर इदंन्नमम (त्याग) की भावना के स्थान पर पद लोलुपता, स्वार्थ व धन अर्जन ने ले लिया है।

वर्तमान में लव जिहादी हिंदू कन्याओं को मुसलमान बना रहे हैं और ईसाई भी अपने तरीके से कार्य कर रहे हैं।

और आर्य समाजी अपने अंदर ही राजनीति कर झगड़ रहे हैं।

महर्षि जी ने राजार्य सभा का विधान भी किया था ।

परंतु आज हम सब मात्र लकीर के फकीर बनते जा रहे हैं । आर्य समाज के द्वारा धरातल पर कोई कार्य नहीं हो रहा है ।

आज हमें संगठित होकर आर्य समाज में स्वयं आहुत होने की आवश्यकता है। तभी आर्य समाज आगे बढ़ कर जनता में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर, जनसमाज को सुधार व उन्नत कर सकता है ।

मंत्री आर्य समाज जनता कॉलोनी जयपुर।

हे मनुष्यो! तुमको वेदी आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिये अच्छी प्रकार क्रियायुक्त यज्ञ करना और सदा सत्य ही बोलना चाहिये और जैसे मैं न्याय से सब विश्व का पालन करता हूँ वैसे ही तुम लोगों को भी पक्षपात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख सम्पादन करना चाहिये।

– महर्षि दयानन्द

समाचार – वीथिका

1. जयपुर के श्री श्रवण कुमार यादव के गाँव में उनके खेत पर आर्यसमाज निर्माण नगर के प्रधान श्री प्रमोद गांधी के ब्रह्मत्व में वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रवण जी का पूरा परिवार सम्मिलित था। श्रवण जी और उनके बेटे पूर्णतः जैविक खेती करके गेहूँ, सोना मोती गेहूँ और ऋतु के अनुरूप फल उगाते हैं।

अब वे अपने गाँव तथा खेत पर इस वैदिक यज्ञ को करके उसकी राख को पानी में डाल के उसका छिड़काव फसलों पर किया करेंगे। इस यज्ञ को करवाने का सुझाव उनको उनके छोटे बेटे कृष्णा यादव ने दी थी। वे अमर बलिदानी राजीव भाई दीक्षित जी के विचारों से प्रेरित हैं।

यादव परिवार ने चित्तौड़गढ़ स्थित पद्मिनी कन्या आर्ष वैदिक गुरुकुल के लिए जैविक गेहूँ की एक बोरी भी दक्षिणा स्वरूप दान की।

इस अवसर पर अंतरंग सदस्य शशांक आर्य, आयुर्वेदिक–प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. राहुल आर्य व स्वदेशी एवं प्राकृतिक उत्पादों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए युवा संस्थापक हरिशंकर ने परिवार को निराकार ईश्वर के मुख्य निज नाम ''ओ३म्'' की धर्म ध्वजा भेंट की।

समस्त यादव परिवार का इस सर्वश्रेष्ठ दान 'अन्न दान' के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद व आभार

सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः

2. **आर्यसमाज मंदिर छानी बड़ी, जोधुर** में साप्ताहिक यज्ञ किया गया। आर्यसमाज छानी बड़ी पुनः व्यवस्थित रूप से कार्य कर रहा है और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा में विधिवत रूप से सम्बद्ध है जिसका विवरण एवम् वार्षिक दशांश आदि प्रतिनिधि सभा को प्राप्त हो गया है। सभा प्रधान– किशन लाल गहलोत

आर्यसमाज मंदिर छानी बड़ी में साप्ताहिक यज्ञ के पावन अवसर पर श्री श्रीराम गोयल, श्री महावीर आर्य, मानसिंह आर्य, श्री राजपाल आर्य, श्री रामेश्वरलाल कुलड़िया, श्री रामेश्वरलाल चान्दोरा, श्री बलजीत आर्य, श्री प्रताप सिंह कुलडिय़ा, श्री सुरेश गोदारा, श्री राजेन्द्र कङवासरा, व लगभग 15 बालक–बालिकाएं उपस्थित रहे।

3. **आर्यसमाज पाणिनिनगर जोधपुर** का द्विवर्षीय निर्वाचन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान आर्य किशनलाल गहलोत व कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत के सानिध्य में व चुनाव अधिकारी श्री राजेंद्र जी वैष्णव आर्य के दिशा निर्देश में सर्व सम्मति से सम्पन हुवे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए

प्रधान– श्री वीरेन्द्र जांगीड

उप प्रधान– श्री संतोष परिहार

श्री ज्ञान सिंह गहलोत

मन्त्री– श्री करण सिंह भाटी

उप मन्त्री– श्री महेश चंद्र आर्य

श्रीमती रूपवती देवड़ा

कोषाध्यक्ष– श्री रमेश चन्द्र आर्य

लेखा निरीक्षक– श्री सच्चिदानंद भाटी

पुस्तकालय अध्यक्ष– श्री चेतनप्रकाश

आर्यवीर दल अधिष्ठाता– श्री महेश परिहार

सभी का निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

4. राजस्थान भरतपुर – वेद ज्ञान और महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा लिखित अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को जन–जन तक पहुंचाने के लिए पूरे राजस्थान में भ्रमणशील वेद प्रचार रथ ने भरतपुर में पहुंच कर धार्मिक पुनर्जागरण प्रारम्भ किया।

धर्म जागरण अभियान के भरतपुर प्रभारी सत्यवीर आर्य नेवाडा निवासी ने बताया कि कमालपुरा बॉर्डर पर स्वागत उपरांत रथ संचालक स्वामी चेतनानंद सरस्वती ने भरतपुर की भुसावर तहसील सीमा में धर्म जागरण अभियान प्रारम्भ किया। खेड़ली मोड़ के पास से सलेमपुर खुर्द, भैसीना, घाटरी, करावली आदि गावों मे प्रवचन भजन के माध्यम से समाज में व्याप्त पाखंड, कुरीति, छुआछूत, नशा मुक्ति, मृत्यु भोज, नास्तिकता, अंधविश्वास, मिथ्या ज्ञान और झूठी मान्यताओं को समाप्त करने के लिए सरल भाषा में समझाया गया।

ज्ञातव्य है कि यह वेद धर्म प्रचार रथ दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर एवम आर्य प्रतिनिधि सभा

राजस्थान जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में कई संभागों के जालोर, सिरोही, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जयपुर, धौलपुर आदि दर्जन भर जिलों में दौरा कर अभियान को गति से चुका है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान/ (अध्यक्ष) श्री किशनसिंह गहलोत व मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष भामाशाह श्री जयसिंह आर्य जी के सौजन्य से यह वेद रथ चलाया जा रहा है ।

प्रांतीय वेद प्रचार अधिष्ठाता डॉ. मोक्षराज आचार्य के निर्देशन में गत 6 माह से निरन्तर प्रदेशभर में गांव गांव – शहर शहर में वेद ज्ञान सत्य ज्ञान फैलाया जा रहा है ।

इस रथ में भजनोपदेशक के रूप में ओमप्रकाश आर्य, देवी प्रभा शास्त्री, राजूराम ढोलकिया प्रचाररत है। इस अभियान में कबड्डी कोच दीवान सिंह, रतन भगत जी, परमसुख जिला पार्षद उदय सिंह अध्यापक, जितेंद्र घाटरी आदि प्राणपण से सहभागी बने।

5. बड़े ही हर्ष का विषय है आर्यजगत् के भामाशाह परोपकारिणी सभा अजमेर के यशस्वी संयुक्त मंत्री व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर के कोषाध्यक्ष व स्मृति भवन न्यास के भी कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत पालडी के 68वें जन्मोत्सव की हार्दिक बधाई प्रेषित करते हुवे हर्ष का अनुभव हो रहा है तथा स्मृति भवन न्यास व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

शुभेच्छु– आर्य किशनलाल गहलोत

6. राजस्थान में आर्य वीर दल के आगामी शिविर

युवाओं के निर्माण का सुनहरा अवसर।

3–9 मई स्थान–छतरगढ़, जिला बीकानेर ।

7–14 मई स्थान कुशलगढ़ बांसवाड़ा ।

14–21 मई ऋषि उद्यान अजमेर।

17–24 मई स्थान– नादिया जिला सिरोही

22–28 मई बहरोड़ जिला अलवर (केवल लड़कियों के लिए)

29 मई से 4 जून तक बहरोड़ जिला अलवर।

1–15 जून राष्ट्रीय स्तर का शिविर स्थान गुरुकुल भैयापुर लाठौत रोहतक हरियाणा

15–29 जून ऋषि उद्यान अजमेर में केवल लड़कियों के लिए

इन शिविरों में अपने बच्चों को जरूर भेजें ।

निवेदक– भवदेव शास्त्री प्रान्तीय संचालक
आर्यवीर दल राजस्थान 9001434484

7. आर्य कन्या विद्यालय अलवर में अपने बच्चों का एडमिशन कराएं।

1. अच्छे संस्कार के लिए
2. हिंदी–इंग्लिश माध्यम के लिए
3. अलवर जिले में सर्वोत्तम रिजल्ट 9 बालिकाओं ने 90 से अधिक अंक प्राप्त किए।
4. छात्रावास सुविधा उपलब्ध है।

आर्य समाज छानी बड़ी, हनुमानगढ़ में साप्ताहिक यज्ञ।

आर्य समाज पाणिनिनगर जोधपुर का द्विवर्षीय निर्वाचन सम्पन्न।

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/214/2023-25

आर. एन. आई नं.10471/60

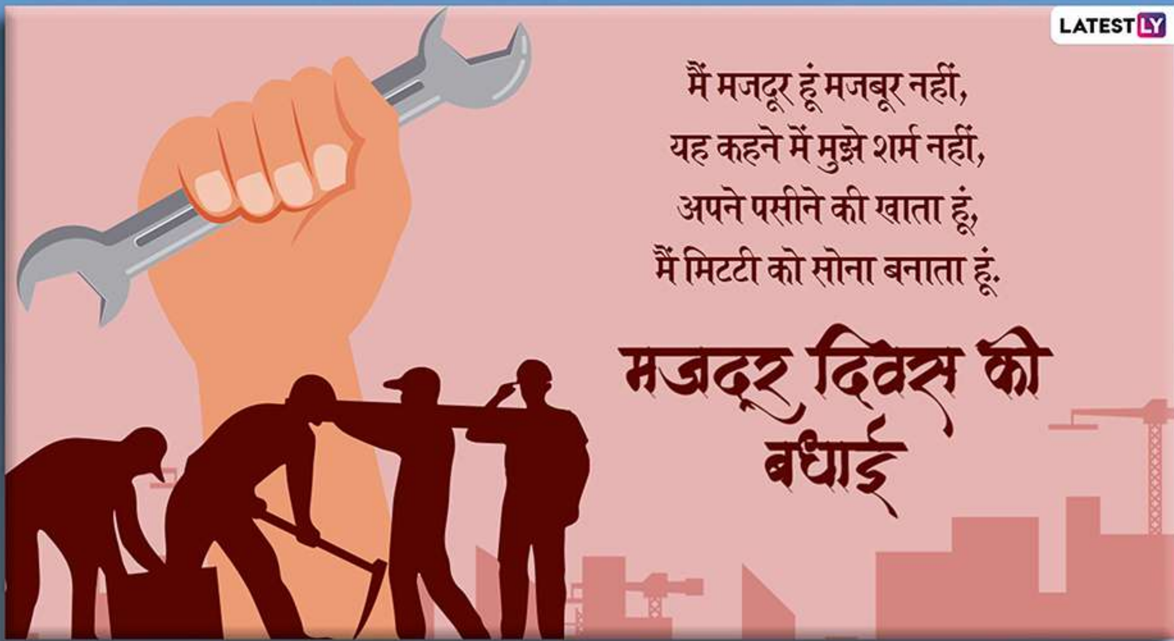

आर्य जगत के भामाशाह, परोपकारिणी सभा अजमेर के यशस्वी संयुक्त मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर व स्मृति भवन न्यास के कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह गहलोत पालडी के 68 वें जन्मोत्सव की हार्दिक बधाई प्रेषित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है ।स्मृति भवन न्यास व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं, शुभेच्छु– आर्य किशनलाल गहलोत ।

प्रेषकः-

सम्पादक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

प्रेषित